Vol 4 Issue 10 Nov 2014

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Volume-4 | Issue-10 | Nov-2014
Available online at www.isrj.orgt

प्राचीन भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणाः पर्यावरणीय घटक ''जल'' के विशेष सन्दर्भ में

डी. पी. सकलानी[1] , प्रेम बहादुर[2]

[1]इतिहास एवं पुरातत्व विभाग,हे.न.ब.ग.वि.वि. श्रीनगर गढ़वाल उत्तराखण्ड.
[2]शोध छात्र , इतिहास एवं पुरातत्व विभाग,हे.न.ब.ग.वि.वि. श्रीनगर गढ़वाल उत्तराखण्ड.

सारांश– 'संस्कृति' का अर्थ है संस्कारयुक्त होना, अर्थात् आध्यात्मिक एवं भौतिक संस्कारों तथा क्रिया-कलापों से ओत-प्रोत हो जाना। मैलिनाउस्की के अनुसार ''संस्कृति सामाजिक विरासत है जिसमें परम्परा से प्राप्त हुआ कला-कौशल, वस्तु सामग्री, यान्त्रिक क्रियाएँ, विचार, आदतें, और मूल्य समावेशित हैं''। वस्तुतः संस्कृति वह जीवन पद्धति है जिसकी स्थापना मानव व्यक्ति तथा समूह के रूप में करता है यह उन अविष्कारों का संग्रह है जिनका अन्वेषण मानव ने अपने जीवन को सफल बनाने के लिए किया है। दामोदर धर्मानन्द कौसाम्बी का मानना है कि उत्पादन के साधनों तथा उनके पारस्परिक सम्बन्धों का तिथि क्रमानुसार अध्ययन करने से ही हमें सांस्कृतिक विकास के क्रम की जानकारी मिल सकती है, जिसके आधार पर हम जान सकते हैं कि जनसाधारण किस प्रकार जीवन यापन करते थे। साधारण शब्दों में यदि कहा जाय तो मानव की विभिन्न गतिविधियाँ यथा खान-पान, रहन-सहन, बोल-चाल, आचार-व्यवहार, क्रिया-कलाप, सोच आदि को ही हम संस्कृति कहते हैं, जो वस्तुतः प्रकृति प्रदत्त है। प्रकृति की व्यवस्था के साथ तारतम्यता रखना प्राचीन भारतीय मानव का सर्व प्रमुख उद्देश्य रहा है।

प्रस्तावना–

'पर्यावरण' का तात्पर्य उस समूची प्राकृतिक, जैविक, भौतिक, सांस्कृतिक व्यवस्था से है जिससे समस्त जीव-जन्तु, वनस्पति, पेड़-पौधे, समुद्र, नदी, तालाब, पर्वत, पठार, आदि उत्पन्न, विकसित एवं तिरोहित होते हैं। पर्यावरण एक वृहद् अवधारणा है; जिसका निर्माण विभिन्न घटकों के योग का परिणाम है जिसमें मुख्यतः पृथ्वी, जल, आकाश, वायु एवं अग्नि हैं। हमारे धार्मिक ग्रन्थों में जल तत्व को सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक के रूप में स्वीकार किया गया है। प्रस्तुत शोध-पत्र प्राचीन भारतीय संस्कृति में जल तत्व के विशेष सन्दर्भ में प्रस्तुत किया जा रहा है।

पृथ्वी का दो तिहाई भाग जल है, मानव शरीर में लगभग ७० प्रतिशत मात्रा जल तत्व की है। मानव रक्त का ८० प्रतिशत अंश जल होने से यह रक्त परिसंचरण द्वारा पोषक तत्वों को विभिन्न अंगों तक पहुँचाने तथा पाचन के फलस्वरूप विसर्जन योग्य पदार्थों की निकासी में सहयोगी होता है। प्राकृतिक रूप से भी जल तत्व अधिक महत्वपूर्ण माना गया है। जल से ही जीवन सम्भव है। जल पृथ्वी पर अनेक रूपों में विद्यमान है। जल औषधीय वनस्पतियों का आधार है।

अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त में ग्रीष्म ऋतु के पश्चात वर्षा ऋतु का उल्लेख किया गया है, जिससे भौगोलिक प्रक्रिया का स्पष्ट वैज्ञानिक संकेत मिलता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि ग्रीष्म के प्रचण्ड ताप से वाष्पीकरण द्वारा मेघ बनते हैं और तदन्तर वर्षा होती है। मनुस्मृति में पंच महाभूतों में भूमि से पहले जल की उत्पत्ति बताई गयी है। भारतीय संस्कृति में जन्म से लेकर मृत्यु के पश्चात दाह-संस्कार के समय भी

जल की महत्ता(गंगा जल) को स्वीकार किया गया है। भारतीय संस्कृति में जल पूजा, नदी पूजा, तालाब पूजा आदि की परम्परा आज भी विद्यमान है।

वैदिक ग्रन्थों में जल की उपयोगिता को महत्वपूर्ण माना गया है और कहा गया है कि जल जीवन है, भेषज है, आयुवर्द्धक है, रोगनाशक है, अमृत है। अतः जल को दूषित करना पाप है। जल की उपयोगिता का वर्णन करते हुए कहा है कि जल में औषधियों के तत्व विद्यमान हैं जिससे सम्पूर्ण रोगों का इलाज सम्भव है । जल में सोम आदि का रस मिलाकर सेवन करने से मनुष्य दीर्घायु होता है। ऋग्वेद में कहा गया है कि जल में औषधियों और वनस्पतियों के भेषज गुण हैं, और ये हमारे रक्षक हैं। जल तत्व के कारण पृथ्वी को अनेक प्रकार से युक्त औषधियों का भरण-पोषण करने वाली कहा गया है। ऋग्वेद में सरस्वती नदी का जो गुणगान किया गया है, वह निश्चय ही आर्यों की जल एवं पर्यावरण के प्रति विशिष्ट श्रद्धा का प्रतीक कहा जा सकता है। वेदों में वृष्टि के देवता इन्द्र की महानता का अनेक प्रकार से वर्णन किया गया है जिससे स्पष्ट होता है कि आर्यों द्वारा पर्यावरणीय घटक जल का महत्व संस्कृति के प्रारम्भिक काल से महसूस कर लिया गया था और अत्यन्त सजगता से उसे संचित एवं संरक्षित करने का उपाय ढूंढ़ लिया गया था। तत्कालीन मनीषियों द्वारा जल के संरक्षक के देवता के रूप में इन्द्र की परिकल्पना की गयी थी। यजुर्वेद में निर्देश दिया गया है कि 'जल को प्रदूषित होने से बचाओ, तथा वृक्षों एवं वनस्पतियों की रक्षा करो।'

प्राचीन भारतीय संस्कृति में ऋग्वेद को औषधीय पौधों के विषय में जानकारी प्रदान करने वाला प्रथम प्रामाणिक ग्रन्थ के रूप में स्वीकार किया जाता है जिससे पता चलता है कि प्राचीन काल में भारतीय मनीषी 'सोम' नामक पौधे का उपयोग औषधि के रूप में करते थे जिसके अर्क(रस) से अनेक प्रकार की व्याधियों का निदान संम्भव था। ऋग्वेद के नवें मण्डल के अनेक शूक्तों में सोम पौधे की प्रशंसा की गयी है और कहा गया है कि ''सोमऔषधिनामधिराज'' अर्थात सोम सभी औषधियों का राजा है। गोल्ड स्टकर ने अपनी पुस्तक ''संस्कृत एण्ड कल्चर'' में सोम को मुख्य वैदिक कालीन देवता माना है। प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति में जड़ी-बूटियों से निर्मित औषधियों का विशद् वर्णन प्राप्त होता है। इस कारण के रूप में यह कहा जा सकता है कि तत्कालीन मानव चूँकि प्रकृति पर निर्भर था, अतः रोग से ग्रसित होने की स्थिति में मानव ने सर्वप्रथम उन पौधों का औषधि के रूप में उपयोग किया होगा जो उन्हें अपने नजदीक सरलता से उपलब्ध हो सकती थी। यही कारण है कि प्राचीन कालीन मानव ने अपने लिए उपयोगी पौधों, औषधीय वनस्पतियों,एवं अन्य जंगली लताओं को संरक्षित करना आरम्भ किया जिसके पोषण के लिए जल का संरक्षण अत्यन्त आवश्यक था।

जल पृथ्वी के दूध के समान है जिसमें जीवनदायिनी शक्ति है। जल से विभिन्न रस प्राप्त होते हैं। जल से ही मातृभूमि की गोद हरी-भरी होती है, अन्न होता है, विभिन्न प्रकार की औषधियॉ होती हैं, वनस्पतियॉ होती हैं, पशुओं को चारा मिलता है, तथा समस्त प्राणियों का पोषण होता है। यजुर्वेद में अग्नि तत्व की सार्वभौमिकता को प्रदर्शित करते हुए कहा गया है कि 'अग्नि औषधियों, वनस्पतियों तथा सम्पूर्ण प्राणियों एवं जलों का गर्भ है। अग्नि; द्युलोक में अपनी प्रचण्डता से पृथ्वी को प्रकाशित करता है, वृक्षों एवं वनस्पतियों को अंकुरित करता है तथा द्यावापृथ्वी के मध्य यह अपनी किरणों द्वारा प्रकाशमान है। अग्नि ही वर्षा का कारण भी है। भारतीय जीवन-व्यवहार में नदियों को रमणीयों की सखी के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। मंदाकिनी नदी सीता के लिए सहेली के समान है , अतः सहेली वस्त्राभरण के बिना; शोभित और मर्यादित नही हो सकती है। अतः मंदाकिनी नदी के दोनों किनारों पर फल-फूल से लदे हुए वन एवं वृक्ष उसके वस्त्र एवं आभूषण के समान प्रतीत होते हैं ऐसा वाल्मीकि के विचारों से प्रतीत होता है। इसी प्रकार सुन्दर चन्दन वनों से आच्छादित द्वीप तथा जलवाली ताम्रपर्णी नदी वाल्मीकि को सुन्दर साड़ी में सजी-धजी एक ऐसी युवती प्रेयसी के रूप में दिखाई पड़ी जो अपने प्रियतम समुद्र में जाकर विलीन हो जाती है। पेड़-पौधे, लताएं, घास, वनस्पितियां आदि सभी धरती के हरित परिधान माने जाते हैं जिनका वर्णन हमें हमारे धार्मिक ग्रन्थों में मिलता है। ये परिधान जल रूपी रूधिर द्वारा संचित होकर पुष्पित एवं पल्लवित होते हैं। महर्षि वाल्मीकि के कल्पना लोक का विषय ही प्रकृति एवं पर्यावरण रहा है। इसी कारण उनकी कृति में - पृथ्वी सगिरिकानना(बालकाण्ड,३६-४६), पृथिवी.....सशैलवनकानना (अरण्य,२३-१६), पूरितातेनशब्देन सनदीगिरिकानना (लंकाकाण्ड-९९-७),तथा इक्ष्वाकूणामियं भूमिः सशैलवनकानना(किष्किन्धा काण्ड-१८-६) आदि उल्लेख मिलते हैं जो प्राकृतिक संतुलन का मूलाधार 'जल तत्व' की महत्ता को प्रदर्शित करते हैं। मेघदूतम में महाकवि कालीदास ने इन्द्र की नगरी अलकापुरी

के वर्णन में बादलों के विभिन्न गतिविधियों का वर्णन अत्यन्त सजीवता से किया है।

वेदों के अनुसार 'यज्ञोवैश्रेष्ठतमंकर्म' (श.ब्रा.) अर्थात् अच्छे से अच्छे कर्म का नाम यज्ञ है। पंच महायज्ञों में जो देवयज्ञ है, उसका सम्बन्ध होम कर्म से है। उसी को अग्निहोत्र कहा जाता है जिसे हवनयज्ञ नाम से भी जाना जाता है। इस यज्ञ में विधिपूर्वक वेदमंत्रों के साथ यज्ञवेदी या तांबे के बने हुए यज्ञकुण्ड में शुद्ध घी,जौ,तिल,चावल और अनेक प्रकार की सुगन्धित,रोगनाशक आयुवर्धक जड़ी-बूटियों तथा लवण-क्षारवर्जित मधुर पदार्थो का होम किया जाता है। यह वायु और वृष्टि को शुद्ध रखने तथा इच्छानुसार अधिक अन्न और औषधि उपजाने वाली वृष्टि का कारण है। इसका वर्णन समस्त वैदिक वाङ्मय में ही नहीं अपितु मनुस्मृति, महाभारत, रामायण और पुराण आदि में भी हुआ है। अन्न अर्थात् भोजन समस्त प्राणियों के लिए आवश्यक है, अन्न की उत्पत्ति वर्षा करने वाले मेघों से होती है, और ये पानी देने वाले मेघ यज्ञ से बनते हैं तथा यज्ञ विधिपूर्वक किये गये धार्मिक अनुष्ठान का नाम है जो शुद्ध जल की प्राप्ति हेतु धर्म सम्मत ही नहीं अपितु आवश्यक भी है।

भारतीय धर्म-ग्रन्थों में गाय को पवित्र पशु माना जाता रहा है। भारतीय संस्कृति में गाय को माँ का दर्जा दिया गया है क्योंकि हिन्दू धर्म में गाय का दूध, दही, धृत, गोबर एवं मूत्र पाँचों तत्वों को पवित्र माना गया है। मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु एवं उसके बाद भी धार्मिक क्रिया कलापों में इन पाँचों तत्वों का ही प्रयोग अनिवार्यतः माना जाता है। इनके प्रयोग का धार्मिक कारण के साथ-ही-साथ वैज्ञानिक कारण भी है। ये पाँचों तत्व पर्यावरण शुद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। जहाँ एक तरफ दूध एवं दही में प्रोटीन एवं बिटामिन होता है वहीं दूसरी तरफ धृत द्वारा हवन यज्ञ किये जाने से वातावरण शुद्ध होता है। गोमूत्र में जल ९२.६ प्रतिशत, कार्वनिक पदार्थ ४.८ प्रतिशत, खनिज पदार्थ २.१ प्रतिशत, नाइट्रोजन १.२१ प्रतिशत, फास्फोरस ०.०१ प्रतिशत, पोटाश १.३५ प्रतिशत, तथा चूना ०.०१ प्रतिशत पाया जाता है। प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया में पौधे अपनी जड़ों द्वारा पृथ्वी से पानी के माध्यम से ही अन्य खनिज तत्व अवशोषित कर पाते हैं। ऋग्वेद में दिव्य जल एवं उसके विभिन्न स्रोतों के बारे में कहा गया है कि 'जो दिव्य जल आकाश से प्राप्त होते हैं, जो नदियों में सदैव गतिशील हैं, जो जल पृथ्वी के अन्दर से प्राप्त होते हैं और स्वयं स्रोतों द्वारा प्रवाहित होकर पवित्रता विखेरते हुए समुद्र में विलीन हो जाते हैं, वे दिव्यता से युक्त जल हमारी रक्षा करें'।

पाराशर ऋषि द्वारा कृषि पाराशर में जल के महत्व को बताते हुए कहा गया है कि ''क्वार, कार्तिक में जिस मूर्ख ने धान्य के लिए जल का संरक्षण (एकत्रीकरण) नहीं किया उसको खेती से आशा नहीं करनी चाहिए क्योंकि जल को संरक्षित किये बगैर कृषि कर्म की कल्पना भी नहीं की जा सकती है जिस प्रकार परिवार का मुखिया अपने कुल की स्त्रियों की रक्षा करता है, उसी प्रकार शरद काल आने पर किसान को अपने कृषि कार्य के लिए जल का संरक्षण करना चाहिए। इसी प्रकार जल संरक्षण हेतु पूजा के विधान का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि किसान को शुद्ध होकर खेत के ईशान कोण की क्यारी में कार्तिक मास की संक्रान्ति को पत्तों सहित नल (नर्कट) को लगा देना चाहिए जिससे पानी की मात्रा फसल में कम न हो और फसल निर्बाध रूप से फूलें एवं फलें। तत्पश्चात मनोहर गन्ध, माल्य और धूप से उस लगाये गये नल की पूजा करके धान्य के वृक्षों की पूजा करनी चाहिए। पुनः दही, भात और विशेष रूप से खीर का तथा ताड़ के फल की गिरी का शस्य (फल) प्रयत्नपूर्वक नैवेद्य देना चाहिए।

जल स्वभावतः पवित्र, रोग नाशक एवं जीवनदायी होता है किन्तु प्रदूषित जल के शुद्धिकरण के लिए भी वैदिक कालीन धर्म ग्रन्थों में उल्लेख किया गया है। ऋग्वेद में कहा गया है कि वरुण (वायु विशेष) से, सोमादि लताओं से, सूर्य की किरणों से तथा वैश्वानर अग्नि से प्रदूषित जल शुद्ध किया जा सकता है। इसी प्रकार जल के औषधीय गुण के बारे में बताते हुए ऋग्वेद कहता है कि जल निश्चय से ही औषधि (भेषजीः)है, जल रोगों को हटाने वाला है। जल सब रोगों की दवा है। वह जल तेरे लिए औषधि बनें। तथा जल चिकित्सा के बारे में भी कहा गया है कि''मुझे सोम ने कहा कि उदकों में सम्पूण औषधियाँ हैं अग्नि सब सुख देने वाला तथा जल औषधियों से युक्त है।'' प्रारम्भिक बौद्ध साहित्य से ज्ञात होता है कि उस समय का जन-मानस सिंचाई के विभिन्न्न साधनों से परिचित था। वर्षा के अतिरिक्त तालाब, नदी, झील और पोखरे आदि का प्रयोग भी सिंचाई के प्राकृतिक साधन के रूप में करता था। यूनानी लेखक डायडोरस ने भी भारत में नदियों से सिंचाई का उल्लेख किया है इससे विदित होता है कि तत्कालीन लोग प्राकृतिक जल संसाधन के प्रति अत्यन्त सजग थे। कुनाल जातक में रोहिणी जल विवाद का प्रसंग आया है। यह विवाद संम्भवतः शाक्यों और कोलियों के मध्य अपनी सूखती हुई फसलों को सींचने के लिए नदी के जल

की प्राथमिकता के प्रश्न पर उठ खड़ा हुआ था। नहर, बॉध, तालाब, कुँऑ इत्यादि अन्य कृत्रिम स्रोतों का निर्माण एवं पुनर्निमाण कार्य समय-समय पर व्यक्तिगत एवं राजकीय प्रयत्नों द्वारा भी सिंचाई के उल्लेख प्राप्त होते हैं। चुल्लबग्ग में कुँओं से पानी खीचनें के लिए तुला, चन्द्र एवं बैलों की जोड़ी इन तीनों साधनों का उल्लेख प्राप्त होता है, जो सम्मिलित रूप से चरस अथवा मोट भी हो सकते हैं और रहट भी। इससे स्पष्ट होता है कि उन लोगों को प्राकृतिक जल संसाधन के साथ-साथ कृत्रिम जल संसाधनों का भी ज्ञान था।

प्राचीन भारतीय जन-जीवन में जल के साथ-साथ वायु, अन्तरिक्ष, अग्नि, पृथ्वी, सूर्य, सोम, उषस् आदि को पूजनीय माना गया है। इसके साथ-ही-साथ जीव-जन्तु, पशु-पक्षी, जलाशय, नदी, कुऑ, तालाब,आदि की पूजा होती रही है। गंगा, यमुना, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु, कावेरी, कृष्णा आदि नदियों को देवी के रूप में पूजा जाता रहा है। माता के रूप में पृथ्वी एवं गाय की तथा देवताओं के वाहन के रूप में हाथी, शेर,व्याघ्र, वृषभ, कुत्ता, चूहा आदि चौपायों की और हंस, गरूण, मयूर, उल्लू आदि पक्षियों को भी पूजनीय मानकर उन्हे संरक्षित किया जाता रहा है। पेड़-पौधों में नीम, पीपल, बरगद, आम, तुलसी, कुश, फूल-फल, कन्दमूल आदि को पूजा के माध्यम से संरक्षित किया जाता रहा है। इन समस्त प्राकृतिक घटकों के अस्तित्व का मूलाधार जल है। अतः जल को सम्पूर्ण जगत के जीवन आधार के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

ऋग्वेद में उद्धरण आया है कि सर्वप्रथम जल में ही सृष्टि का बीज पड़ा। जल में सभी तत्वों (देवों) का समावेश है। समस्त देवता जल में ही विद्यमान हैं। यजुर्वेद में भी कहा गया है कि सर्वप्रथम जल में ही सृष्टि का बीज पड़ा जिससे अग्नि की उत्पत्ति सम्भव हुई। अग्नि और जल द्वारा ही पृथ्वी का निर्माण हुआ। राम शरण शर्मा का मानना है कि ऋग्वैदिक आर्य प्राकृतिक शक्तिओं से अत्यधिक प्रभावित थे जिसके कारण उनके समस्त देवता प्राकृतिक शक्तियों के प्रतीक माने गये। इन प्राकृतिक शक्तियों का मूल तत्व जल है। अतः जल ही सृष्टि का मूल कारण है। जब जल से अन्य तत्वों का संयोजन होता है तो एक नई सृष्टि उत्पन्न होती है जो किसी भी मानव संस्कृति का मूल आधार स्तम्भ होती है। जल, मिट्टी और वायु का योग आदिम मानव की कृषि, वन और औषधीय सम्पत्ति का आधार है। जिससे आगे चलकर मानव संस्कृति का निर्माण सम्भव हो सका। विश्व की समस्त सभ्यताओं का आविर्भाव नदियों के किनारे ही सम्भव हुआ जिसका कारण जल की सुगमता से उपलब्धता को माना जाता है। जैसे-सिन्धु, मेसोपोटामियां, सुमेरियन, असीरियन, बेबीलोनियां आदि। इससे भी किसी संस्कृति के विकास में जल की महत्ता सिद्ध होती है। भारत में पनपी तथा विकसित हुई सिन्धु सभ्यता के अधिकतम नगरों का निमार्ण भी नदियों के किनारे ही सम्भव हुआ। जैसे- हड़प्पा (रावी नदी), मोहनजोदड़ों (सिन्धु नदी), चन्हूदड़ों (सिन्धु नदी), लोथल (भोगवा नदी), कालीबग्गा (सरस्वती दृष्द्वती) एवं बनमाली (सरस्वती) आदि। इसी प्रकार भारत में विभिन्न संस्कृतियों का निमार्ण; जैसे- झूकर-झाकर संस्कृति (सिन्धु नदी), मालवा संस्कृति (नर्मदा घाटी) तथा वनास संस्कृति (वनास नदी घाटी) आदि।

पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति के प्रश्न पर अधिकतर विद्वान इस बात से सहमत हैं कि जीव की उत्पत्ति 'मॉसप्लान्ट' अर्थात् 'काई' से सम्भव हुई। इस काई का भी निर्माण जल द्वारा ही सम्भव हो सका अतः हम कह सकते हैं कि जीवन उत्पत्ति का मूलतत्व जल है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि जल से जीव की उत्पत्ति हुई तथा जीव नें संस्कृति का निर्माण किया। अतः संस्कृति भी जिसे जीवन्त संस्कृति नाम दिया जाता है; जल से ही सम्भव हुई।

उन्नति-अवनति, उत्थान-पतन, ह्रास-विकास प्रकृति के शास्वत् नियम हैं ऐसा कहा जाता है। किन्तु ये घटनायें अनायास ही घटित नहीं होती यह भी सत्य है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि प्रत्येक घटना का कारण होता है। निश्चित रूप से मानवीय गतिविधियों को सर्वोच्च कारण के रूप में निरन्तर स्वीकारा जाता रहा है। प्रश्न उठता है कि क्या सिन्धु सभ्यता का पतन मानवीय गतिविधियॉ एवं प्रकृति के साथ निरन्तर छेड़छाड़ का परिणाम था जिससे पर्यावरण असन्तुलित हो गया या अत्यधिक नगरीकरण और औद्योगीकरण का परिणाम था जिससे मिट्टी की गुणवत्ता का क्षरण हुआ था तथा पानी प्रदूषित हो गया, यह एक विचारणीय प्रश्न है। क्योंकि गुरिया-मनका उद्योग, कांच उद्योग, धातु उद्योग आदि के साक्ष्य हमें सिन्धुघाटी सभ्यता के अनेक नगरों एवं महानगरों से प्राप्त होते हैं। कलिंग राजा खारवेल अपने शासन काल के पॉचवें वर्ष तनसुलि से एक नहर के जल को अपनी राजधानी ले आया था। इस नहर का निर्माण नन्द राजा द्वारा ३०० वर्ष पूर्व किया गया था। खारवेल ने सिंचाई एवं उससे सम्बन्धित अन्य कार्यो पर

बहुत अधिक धन व्यय किया था जबकि एरस्टोस्थनीज लिखता है कि भारत में हर वर्ष गर्मियों एवं शर्दियों में नियमित रूप से वर्षा होती थी उसका मानना था कि विशाल नदियों का जो पानी भाप बनकर उड़ता था वह भी वर्षा का एक कारण था। भारतीय उपमहाद्वीप प्राकृतिक जल संसाधन के क्षेत्र में अत्यन्त समृद्ध था। जब प्राकृतिक जल की उपलब्धता इतनी पर्याप्त थी तो तत्कालीन शासकों द्वारा जल के संरक्षण एवं रख रखाव पर इतने धन का अपव्यय क्यों किया जा रहा था। क्या यह प्रकृति के साथ तत्कालीन मानवीय हस्तक्षेप का परिणाम था, जिससे प्राकृतिक जल प्रदूषित हो गया था। मेगस्थनीज कहता है कि भारत में सूखे या अभाव का कोई नाम भी नहीं जानता था। वर्तमान समय में भी जल प्रदूषण का प्रमुख कारण मानवीय गतिविधियों को ही माना जाता है जो सर्वथा सत्य भी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१.इनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल साइंसेज,भाग-४, पृष्ठ-६२१।
२.अथर्ववेद (पृथ्वी शूक्त), १२/१/३६। विश्ववन्धु,वेदशास्त्र संग्रह,साहित्य अकादमी दिल्ली,१९६६। ग्रष्मस्ते भूमें वर्षाणि शरद्धेमन्तः शिशिरो वसन्तः ।ऋतवस्ते विहिता हायनीरहोरात्रे पृथिवि नो दुहातान।
३.ऋग्वेद-१/२३/२०। श्री मन्मोक्षमूलर भट्ट, चौखम्भा संस्कृत सीरीज वाराणसी-१९६६, भाग-१। अप्सु.. अन्तर्विश्वानि भेषजा। आपश्च विश्वभेषजी।
४.ऋग्वेद-१/२३/२१। आपः पृणीत भेषजम् ।
५.ऋग्वेद-८/६/५ । श्री मन्मोक्षमूलर भट्ट, चौखम्भा संस्कृत सीरीज वाराणसी-१९६६, भाग-३।
६.अथर्ववेद-१२/१/२ । विश्ववन्धु,वेदशास्त्र संग्रह,साहित्य अकादमी दिल्ली-१९६६ ।नानावीर्या ओषधीर्या बिभर्ति ।
७.ऋग्वेद -२/४/१६ । श्री मन्मोक्षमूलर भट्ट, चौखम्भा संस्कृत सीरीज वाराणसी-१९६६, भाग-२।
८.शुक्ल यजुर्वेद-६/२२ । पं० जगदीश लाल शास्त्री,मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली-१९७१।
९.गोल्डस्टकर टी०,संस्कृत एण्ड कल्चर, इन्डोलाजिकल बुक हाऊस, दिल्ली-१९७१,पृष्ठ-२९।
१०.कृष्ण लाल, वेद परिचय, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय,-१९९३,पृष्ठ-१६३।
११.वही।
१२.शुक्ल यजुर्वेद,१२/३७ महीधर भाष्य। गर्भो अस्योषधीनां गर्भो वनस्पतीपसम्। गर्भो विश्वस्य भूतस्याग्ने गर्भो अपामसि।
१३.गिरिजा शंकर त्रिवेदी, वल्यमिकि के वन और वृक्ष, श्रीमती राजदेवी गीतिका प्रकाशक, देहरादून-१९८८, पृष्ठ-९।
१४.अयोध्या काण्ड; ९५-१४, ।श्री वाल्यमीकि रामायणम् पं० रामतेज पाण्डेय,चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान दिल्ली-२००९। सखोवच्च विगाहस्व सीते मन्दाकिनीं नदीम् ।
१५.किष्किन्धा काण्ड,१४-१७,१/२, सा चन्दनवनैश्चित्रैः प्रच्छन्नद्वीपवारिणी ।कान्तेवयुवतीकान्तं समुद्रमुव गाहते।।
१६गिरिजा शंकर त्रिवेदी, वाल्मीकि के वन और वृक्ष, गीतिका प्रकाशन देहरादून,१९८८,पृष्ठ-८।
१७नित्यानन्द मिश्र, शिवचरण पाण्डेय, पर्यावरण संस्कृति प्रदूषण एवं संरक्षण, श्रीअल्मोड़ा बुक डिपो,अल्मोड़ा-१९९८ ।पृष्ठ-१२।
१८.डॉ० रवीन्द्र शर्मा,औषधीय एवं सगन्ध पौधों की कृषि तकनीकि,दया पब्लिशिंग हाऊस दिल्ली-२००५, पृष्ठ-२७।
१९.ऋग्वेद, ७/४९/२ । श्री मन्मोक्षमूलर भट्ट, चौखम्भा संस्कृत सीरीज वाराणसी-१९६६, भाग-३। या आपो दिव्या उत व सुवन्ति खनित्रिगा उत व याः स्वञ्जाः। समुद्रार्था वा शुचयः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु।। ।
२०.कृषि पराशर,(१९६-२००) संपादक श्री द्वारका प्रसाद शास्त्री चौखम्भा संस्कृत सीरीज वाराणसी-२००३, पृष्ठ-४३।
२१.उपेन्द्र कुमार त्रिपाठी, यजुर्वेद में पर्यावरण ,चौखम्भा संस्कृत भवन वाराणसी,प्रथम संस्करण-२००८,पृष्ठ-११३। आप इद्वा उ.....कृण्वन्तु भेषजम्। (ऋग्वेद,१०.१३७.६)।
२२.वही, पृष्ठ-१०७। अप्सु में सोमों.....भुवमापश्च विश्वभेषजीः ।(ऋग्वेद,१.२३.२०)
२३.आर०सी० मजूमदार, दि क्लासिकल एकाउन्ट्स ऑफ इण्डिया,कलकत्ता-१९६०। पृष्ठ-२३३,२३४।

२४.राजवन्त राव, भारत में कृषि एवं कृषक समुदाय, प्रतिभा प्रकाशन दिल्ली–२०१०। पृष्छ–१६३।
२५.वही,।
२६.अच्छे लाल, प्राचीन भारत में कृषि, वी०एच० यू० वाराणसी,–१९८०। पृष्ठ–१०४।
२७.रमेश चन्द मजूमदार, प्राचीन भारत, मोतीलाल बनारसी दास दिल्ली–२००२ ।पृष्ठ–१०८।
२८.के०ऐ०नीलकण्ठ शास्त्री, नन्द–मौर्य–युगीन भारत,मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली–२०००। पृष्ठ–९५।
२९.वही।
३०.वही। पृष्ठ–९६।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org